483 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
चतुर्थ अंक
नवम्बर 2018

इस अंक में...

13 सम्पादकीय
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
17 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
29 यूएनडीपी की मानव विकास रैंकिंग में भारत का 130वाँ स्थान
31 प्रमुख नियुक्तियाँ
33 नवीनतम सामान्य ज्ञान
42 रोजगार समाचार
45 खेलकूद
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
56 युवा प्रतिभाएँ
66 सिविल सेवा परीक्षा—सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जो आप चाहें, प्राप्त करें
69 स्मरणीय तथ्य
72 विश्व परिदृश्य
77 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
79 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
82 फोकस—वैश्विक व्यापार युद्ध के साए में विश्व व्यापार संगठन का भविष्य
84 सामाजिक-आर्थिक लेख—समग्र एवं समावेशी विकास हेतु पहलें
87 आर्थिक लेख—भारत विश्व की 6वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था : फिर भी देश गरीब
90 राजनीतिक लेख—भारतीय राजनीति में जातिवाद
91 समसामयिकी विधायी लेख—भारतीय लोकतंत्र का अपराधीकरण एवं व्याप्त भ्रष्टाचार : शुचिता और पारदर्शिता का प्रयास
95 सामाजिक लेख—भारत में स्त्रियों की दशा एवं उसमें सुधार
97 प्राकृतिक संसाधन लेख—जल संरक्षण की विधियाँ
99 सैन्य लेख—जंग का नया मैदान : अन्तरिक्ष
101 भौगोलिक लेख—आपदा प्रबन्धन : कारण एवं प्रभाव
104 उत्तर प्रदेश सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा (पीसीएस) प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष-सामान्य अध्ययन
110 सार संग्रह
114 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन—(i) छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा—2017
121 (ii) उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. वन संरक्षक अधिकारी परीक्षा, 2017
132 (iii) यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018
138 (iv) आगामी उत्तर प्रदेश, बिहार व मध्य प्रदेश न्यायिक सेवा (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न-विधि
145 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
147 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
149 ऐच्छिक विषय—दृश्य कलाएँ—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018
157 वार्षिक रिपोर्ट—2017-18 : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में
160 तर्कशक्ति—(i) एस.बी.आई.पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2018
163 (ii) यूनाइटेड इण्डिया एश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड असिस्टेंट (प्रा.) परीक्षा, 2017
166 गणितीय अभियोग्यता—आई.बी.पी.एस.-आर.आर.बी. ऑफीसर (प्रा.) परीक्षा, 2017
171 क्या आप जानते हैं ?
172 अपना ज्ञान बढ़ाइए
173 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—आरक्षण की नीति ने भारतीय जाति व्यवस्था को पुनर्जीवित कर दिया है
175 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—कृषि को व्यवसाय का दर्जा दिए बिना कृषिकों की आय को दोगुना करना एक दिवास्वप्न
178 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—472 का परिणाम

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

नारी शक्ति को पहचानें और उस पर गर्व करें

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफला: क्रिया।।

नारी शक्ति का प्रतीक है, परिवार के मान-सम्मान का प्रतीक है. जहाँ नारी की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं. जिन परिवारों में नारी का अपमान किया जाता है, वहाँ सभी प्रकार की पूजा करने के बाद भी देवता निवास नहीं करते. भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में विगत दो शताब्दियों में नारियों की सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक स्थितियों में व्यापक रूप से परिवर्तन आया है वे अब घरों की चहारदीवारी में कैद भोग-विलास की वस्तु मात्र न रहकर समाज एवं देश के बहुआयामी फलक पर नित नई ऊँचाइयों को छूते हुए कीर्तिमान स्थापित कर रही है. शिक्षा एवं ज्ञान के प्रसार के साथ लोगों की सोच में सकारात्मक रूप से परिवर्तन आया है, किन्तु अभी भी समाज संक्रमणकालीन अवस्था से गुजर रहा है.

परिवर्तन के इस दौर में समाज और नैतिक मूल्यों की भारी गिरावट दर्ज हुई. जीवन भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण इतना एकपक्षीय हो गया कि सुर-असुर के बीच का झीना परदा लज्जा भी हट गया. ***लज्जा रूपेण संस्थिता.*** *लज्जा ही सदाचार बनाए रखती है और अनाचार में प्रवेश से रोकती है. लज्जा के पीछे कई भय रहते हैं. उसी से व्यक्ति मर्यादा में रहता है. मर्यादा वह गुण है, जो व्यक्ति के अन्य सभी गुणों को सही दिशा देता है, व्यक्ति की कार्यक्षमता में विस्तार करता है, व्यक्ति को अहंकार की भावना से परे रखता है. नारी को लज्जा-रूपी आभूषण प्रदान करता है, वीरों को जितेन्द्रिय बनाता है आदि. वास्तव में मर्यादा जीवन-मूल्यों की सुरक्षा का कवच है. चरित्र मर्यादा से बँधा दिखता है. भगवान श्रीराम ने मर्यादा की रक्षार्थ मात्र एक रजक के कहने पर अपनी अर्धांगिनी सीताजी को गर्भावस्था में महल से बाहर कर निर्जन वन में में भेज दिया था जहाँ उन्होंने महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में एकाकी जीवन व्यतीत किया.*

पुरुष में अहंकार के कारण आसुरी (नकारात्मक) भाव अधिक होते हैं. स्त्रियाँ ही इनका संतुलन है, लेकिन यह सत्य है कि आज नारी का स्त्रैया घट रहा है. कारण-शिक्षा ने नारी का पौरुष भाग अधिक विकसित किया. भयमुक्त भी किया और विवाह की उम्र भी बढ़ा दी. विवाह-विच्छेद होते ही सुरक्षा-चक्र टूटने लगा. शायद नारी की अत्यधिक महत्वाकांक्षा का दोहन हो रहा है. हर मुकाम पर अत्याचार, बलात्कार और वह भी अपने समर्थ लोगों द्वारा, किसका हृदय नहीं चीर देगा? तब लगता है कि नारी होना एक अभिशाप है, लेकिन यह सच है कि इसका उत्तर स्त्रैया-भाव में निहित है. स्त्रैया भाव के घटने का मुख्य कारण लक्ष्मण-रेखा को पार कर देना है, मर्यादा को भूल जाना है. नारी के शुरू का दौर ग्लेमर युक्त रहता है. उम्र के साथ एक भाव फिर से मन में कौंधने लगता है कि घर पर रहती, तो कभी अपमान के इतने घूँट नहीं पीने पड़ते.